ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

अनुशीलन समिति एवं डॉ. हेडगेवार

भूपेश कुमार, शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
Bhupesh004@yahoo.com

सारांश (Abstract)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी आंदोलन में अनुशीलन समिति का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1902 में कलकत्ता में स्थापित यह संगठन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति की तैयारी का प्रमुख केंद्र था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का इस संगठन से गहन एवं प्रारंभिक संबंध रहा। प्रस्तुत शोध-आलेख में अनुशीलन समिति की वैचारिक पृष्ठभूमि, उसकी कार्यपद्धति तथा डॉ. हेडगेवार के साथ इसके संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह शोध दर्शाता है कि किस प्रकार अनुशीलन समिति में प्राप्त प्रशिक्षण, अनुशासन और संगठनात्मक अनुभव ने आगे चलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संरचना और कार्यप्रणाली को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाई। ऐतिहासिक स्रोतों, अभिलेखागारीय सामग्री एवं प्राथमिक साक्ष्यों के आधार पर यह शोध क्रांतिकारी राष्ट्रवाद एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बीच वैचारिक सेतु को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: अनुशीलन समिति, डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, क्रांतिकारी आंदोलन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बंगाल विभाजन, स्वतंत्रता संग्राम, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ थे। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की विफलता के पश्चात् राष्ट्रीय आंदोलन ने नये स्वरूप धारण किए। एक ओर जहाँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संवैधानिक मार्ग से सुधारों की माँग कर रही थी, वहीं दूसरी ओर क्रांतिकारी संगठनों ने सशस्त्र संघर्ष को स्वतंत्रता का एकमात्र मार्ग माना। बंगाल इस क्रांतिकारी चेतना का प्रमुख केंद्र बना, जहाँ अनेक गुप्त संगठनों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सक्रिय संघर्ष का बीड़ा उठाया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

अनुशीलन समिति इन क्रांतिकारी संगठनों में सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सुसंगठित थी। इसकी स्थापना 1902 में कलकत्ता में हुई थी और इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को शारीरिक, बौद्धिक एवं मानसिक रूप से प्रशिक्षित कर सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार करना था। इस संगठन ने न केवल बंगाल अपितु समस्त भारत के क्रांतिकारियों को एक मंच प्रदान किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का अनुशीलन समिति से गहरा एवं प्रारंभिक संबंध रहा, जिसने उनकी वैचारिक दृष्टि एवं संगठनात्मक कौशल को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रस्तुत शोध-आलेख में अनुशीलन समिति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसकी वैचारिक अधारशिला, कार्यप्रणाली तथा डॉ. हेडगेवार के साथ इसके संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह शोध दर्शाता है कि किस प्रकार क्रांतिकारी आंदोलन की विरासत ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव रखी।

अनुशीलन समिति: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं स्थापना

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में राष्ट्रीय चेतना का प्रबल उदय हुआ। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने यद्यपि तात्कालिक सफलता नहीं पाई, परंतु इसने भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की अमिट आकांक्षा जगा दी। इस काल में बंगाल भारतीय राष्ट्रवाद का केंद्र बन गया था। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का उपन्यास *'आनंद मठ'* क्रांतिकारियों का आदर्श बना, जिसमें संन्यासी विद्रोह का चित्रण किया गया था और *'वन्दे मातरम्'* गीत राष्ट्रीय आंदोलन का प्रेरणा-स्रोत बना।

1902 में कलकत्ता में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई। प्रमथनाथ मित्र इसके प्रथम अध्यक्ष थे। समिति का नाम *'अनुशीलन'* बंकिम चंद्र के उपन्यास *'आनंद मठ'* में वर्णित संगठन से प्रेरित था, जहाँ *'अनुशीलन'* का अर्थ आत्म-अनुशासन एवं राष्ट्र-सेवा के लिए समर्पण था। इस समिति का मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारियों को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति के लिए संगठित कर तैयार करना था।

1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन ने समिति को नई ऊर्जा प्रदान की। बंग-भंग आंदोलन ने समस्त बंगाल में राष्ट्रीय चेतना की लहर उत्पन्न कर दी। इसी काल में अनुशीलन समिति ने अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया और बंगाल के बाहर भी अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। बारींद्र कुमार घोष, अरविंद घोष, जोगेश चंद्र चटर्जी, त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती जैसे प्रमुख क्रांतिकारी इस समिति से जुड़े थे।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

अनुशीलन समिति की संगठनात्मक संरचना एवं कार्यप्रणाली

अनुशीलन समिति एक अत्यंत सुसंगठित एवं अनुशासित संगठन था। इसकी संरचना गोपनीयता के सिद्धांत पर आधारित थी, जिससे ब्रिटिश पुलिस से बचाव संभव हो सके। समिति के सदस्यों को विशेष रूप से प्रशिक्षित कर शारीरिक, बौद्धिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाया जाता था। त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि *'देश की स्वाधीनता के लिए जिन लोगों में प्राण त्यागने का संकल्प हो, जो विवाह और सांसारिक लोभ से वंचित रहकर समिति के लिए सर्वदा कार्यरत रहें, ऐसे लोगों को यहाँ जगह दी जाती थी।'*

समिति का प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुआयामी था। शारीरिक प्रशिक्षण में छुरा चलाना, कुश्ती, लाठी भाँजना, तलवार, बंदूक चलाने व ड्रिल आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रतिवर्ष समिति का कृत्रिम युद्ध (मॉक फाइट) होता था और समय-समय पर खेलों की प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती थी। बौद्धिक प्रशिक्षण में देशभक्ति, स्वराज और बलिदान की भावना को बढ़ावा देने वाले साहित्य का अध्ययन कराया जाता था। समिति के सदस्यों को विभिन्न चरणों में, अलग-अलग स्तर प्राप्त करने पर, शपथ दिलाई जाती थी, जिसमें देश की स्वतंत्रता के लिए प्राण देने की प्रतिज्ञा होती थी।

अनुशीलन समिति में कठोर अनुशासन था। इसकी नियमित होने वाली बैठकों में पिछले कार्यों की समीक्षा और आगामी योजनाओं पर चर्चा होती थी। सदस्यों को गोपनीयता का कड़ाई से पालन करना होता था और किसी भी प्रकार की सूचना का प्रकटीकरण गंभीर अपराध माना जाता था। यह संगठनात्मक अनुशासन आगे चलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यप्रणाली में भी प्रतिबिंबित हुआ।

डॉ. हेडगेवार: प्रारंभिक जीवन एवं राष्ट्रवादी चेतना का उदय

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा नागपुर में हुई थी। उनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर मध्य भारत व महाराष्ट्र की तात्कालिक व दीर्घकालिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ा। उस क्षेत्र के महापुरुषों–समर्थ गुरु रामदास, संत नामदेव, संत तुकाराम, छत्रपति शिवाजी, तांत्या टोपे, बाल गंगाधर तिलक जैसे स्वतंत्रता सेनानियों की छाप उनके जीवन में दिखाई पड़ती है।

बचपन से ही केशव में राष्ट्रीय चेतना की प्रबल भावना थी। 1897 में रानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के हीरक महोत्सव के अवसर पर स्कूल में बाँटी गई मिठाई को आठ वर्षीय केशव

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

ने न खाकर कूड़े में फेंक दिया। यह उनका अंग्रेजों के प्रति गुलामी का गुस्सा और चिढ़ थी। इन घटनाओं एवं आंदोलनों का डॉ. हेडगेवार के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

बंग-भंग आंदोलन के समय डॉ. हेडगेवार किशोरावस्था में थे। इस आंदोलन ने उन्हें राष्ट्रीय एकता और अखंडता की ओर बढ़ने को प्रेरित किया। उन्होंने समझा कि भारत को एक एकीकृत शक्तिशाली राष्ट्र बनाने की आवश्यकता है ताकि इसे विदेशी शासन से मुक्त किया जा सके। इस आंदोलन के दौरान उन्होंने यह भी सीखा कि लोगों में सामूहिक रूप से कितनी बड़ी शक्ति होती है। लाल-बाल-पाल के विचार डॉ. हेडगेवार पर विशेष रूप से प्रभाव डाल रहे थे। बाल गंगाधर तिलक के प्रति तो डॉ. हेडगेवर के मन में अगाधन श्रद्धा थी।

केशव ने अपने कुछ तरुण मित्रों के साथ *'चर्चा-मंडल'* बनाकर देश की विविध परिस्थितियों पर समय-समय पर भाषणों तथा परिचर्चाओं के कार्यक्रम करने प्रारंभ कर दिए थे। क्रांतिकारी डॉ. पांडुरंग राव खानखोजे की संस्था *'स्वदेश बांधव'* की ओर से स्वदेशी वस्तुओं के प्रचारार्थ बनी दुकान *'आर्य बांधव वीथिका'* पर पुस्तकों व अन्य वस्तुओं को बेचने की जिम्मेदारी भी केशव ने ली थी। स्वदेशी का प्रचार करने के लिए वे निरंतर जनसंपर्क करते थे।

डॉ. हेडगेवार एवं अनुशीलन समिति: संबंधों का विश्लेषण

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का अनुशीलन समिति से गहरा और प्रारंभिक संबंध रहा है। तत्कालीन समाज जीवन में कार्य कर रहे प्रमुख लोगों के सहयोग से कलकत्ता (अब कोलकाता) में डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए गए। कलकत्ता में जाकर रहने के पीछे एक बड़ा उद्देश्य यह भी था कि महाराष्ट्र के गुप्त क्रांतिकारी आंदोलन को बंगाल की सबसे बड़ी क्रांतिकारी संस्था से जोड़ दिया जाए। इसी उद्देश्य के आलोक में वे अनुशीलन समिति के संपर्क में आए। तिलक की सांस्कृतिक राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित केशवराव नागपुर में सक्रिय रहते हुए बंगाल के क्रांतिकारी दल अनुशीलन समिति से भी जुड़ गए थे।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी जोगेश चंद्र चटर्जी ने अपनी आत्मकथा 'इन सर्च ऑफ फ्रीडम' में लिखा है कि *'नागपुर के डॉ. हेडगेवार भी समिति के सदस्य बने जब वे कलकत्ता के राष्ट्रीय चिकित्सा महाविद्यालय के छात्र थे। उन्होंने एक मिशनरी जीवन जिया और बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, एक शारीरिक संस्कृति संगठन की स्थापना की।'* समिति में इनका छद्म नाम 'कोकेन' था। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि हेडगेवार समिति के सक्रिय सदस्य थे और उन्होंने गोपनीयता के सभी नियमों का पालन किया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती, जो अनुशीलन समिति के प्रमुख सदस्य थे, ने अपनी आत्मकथा 'जेल में तीस वर्ष' में लिखा है कि हेडगेवार 1910 में नेशनल मेडिकल कॉलेज के छात्र थे। नारायण दामोदर सावरकर और कुछ अन्य मराठा छात्र भी उसी कॉलेज में पढ़ते थे। उस समय प्रसिद्ध बंगाली पुस्तक *'बांग्ला विप्लववाद'* अर्थात 'बंगाल के क्रांतिकारी विचार' के लेखक नलिनी किशोर गुहा भी वहीं पढ़ते थे। गुहा ने ही हेडगेवार, वीर सावरकर और उनके भाई को समिति से जोड़ा।

नारायण दामोदर सावरकर जब पढ़ने के लिए कलकत्ता आए तो वे हेडगेवार के साथ शांति निकेतन मराठा लॉज में ही रूके। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के दामाद डी. वी. विधवांस मांडले जेल में बंद तिलक से मिलने के लिए जा रहे थे तो 3 फरवरी 1912 को इनके लॉज में रूके। प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्याम सुंदर चक्रवर्ती भी वहाँ उनसे मिलने के लिए आए और इन तीनों की वहाँ लंबी मंत्रणा हुई। यह तथ्य दर्शाता है कि हेडगेवार का लॉज क्रांतिकारियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था।

हेडगेवार बंगाल एवं मध्यप्रांत की क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच कड़ी का भी काम कर रहे थे। सन् 1910 से 1915 के बीच बड़ी मात्रा में पिस्तौल एवं अन्य शस्त्र बंगाल से मध्यप्रांत भेजे गए थे। हेडगेवार जब भी नागपुर आते थे तब अपने साथ छिपाकर शस्त्र लाया करते थे। 1910 में राजद्रोह के आरोप में हेडगेवार को गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन सबूतों के अभाव में उन्हें रिहा कर दिया गया।

अनुशीलन समिति का प्रभाव: संघ की संगठनात्मक संरचना पर

अनुशीलन समिति में प्राप्त प्रशिक्षण और अनुभव ने डॉ. हेडगेवार की संगठनात्मक दृष्टि को गहराई से प्रभावित किया। जब उन्होंने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, तो अनुशीलन समिति की संगठन शैली, गोपनीयता, निष्ठा आधारित सदस्यता और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण जैसे गुण संघ में भी विकसित किए गए।

अनुशीलन समिति में शारीरिक प्रशिक्षण का जो महत्व था, वह संघ की शाखा-पद्धति में भी प्रतिबिंबित हुआ। समिति में दिए जाने वाले कुश्ती, लाठी, ड्रिल आदि का प्रशिक्षण संघ की शाखाओं में भी अपनाया गया। दंड, व्यायाम, सूर्य-नमस्कार आदि शारीरिक प्रशिक्षण मात्र नहीं थे, बल्कि ये आत्मबल और आत्म-संयम के प्रशिक्षण-उपकरण बने। समिति में जिस प्रकार की प्रतिज्ञा दिलाई जाती थी, वैसी ही पद्धति संघ में भी अपनाई गई।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

मार्च 1928 में नागपुर के निकट एक पहाड़ी पर स्वयंसेवकों को एकत्र करके, भगवाध्वज के समक्ष प्रतिज्ञा का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस प्रथम कार्यक्रम में 99 स्वयंसेवकों ने प्रतिज्ञा की। प्रतिज्ञा में कहा गया: *'मैं, सर्वशक्तिमान श्री परमेश्वर व अपने पूर्वजों का स्मरण कर प्रतिज्ञा करता हूं कि, मैं अपने पवित्र हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति व हिंदू समाज का संरक्षण कर तथा हिंदू राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का घटक बना हूं।'*

अनुशीलन समिति की कठोर अनुशासन पद्धति भी संघ में दिखाई देती है। समिति में जिस प्रकार नियमित बैठकों में कार्यों की समीक्षा और योजनाओं पर चर्चा होती थी, वैसी ही पद्धति संघ की बैठकों में भी अपनाई गई। संघ की कार्यपद्धति में बौद्धिक प्रशिक्षण का जो महत्व है, वह भी समिति से प्रेरित है।

वैचारिक तुलना: क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तक

अनुशीलन समिति और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बीच वैचारिक समानताएँ और भिन्नताएँ दोनों ध्यान देने योग्य हैं। समिति का प्राथमिक लक्ष्य सशस्त्र क्रांति के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना था, जबकि संघ ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के माध्यम से समाज को संगठित करने का मार्ग अपनाया। परंतु दोनों संगठनों में राष्ट्र के प्रति समर्पण, अनुशासन, त्याग और बलिदान की भावना समान थी।

डॉ. हेडगेवार ने अनुशीलन समिति में अपने अनुभव से यह सीखा कि केवल सशस्त्र क्रांति से स्थायी परिवर्तन संभव नहीं है। उन्होंने अनुभव किया कि आत्महीन समाज कभी स्वतंत्र नहीं रह सकता तथा राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी जब सांस्कृतिक आत्मा पुनर्जीवित होगी। इसलिए उन्होंने संगठित समाज-निर्माण को अपना लक्ष्य बनाया।

गुरु गोलवलकर ने भी इस विचार को आगे बढ़ाते हुए कहा कि 'राष्ट्र के वर्तमान पतन को रोकने के लिए, हमें अपनी राष्ट्रीय चेतना और भावात्मक आधार को पुनर्जीवित करना होगा, जिसकी जड़ें हमारे गौरवशाली इतिहास, परंपरा और राष्ट्रीय आदर्शों में गहरी हैं।' यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का वह स्वरूप था जो क्रांतिकारी आंदोलन की विरासत को नए रूप में प्रस्तुत करता था।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय जब देश में नेताजी के नेतृत्व में सशस्त्र क्रांति की तैयारी हो रही थी, उस समय अनुशीलन समिति के प्रमुख सदस्य त्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती डॉ. हेडगेवार से

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

मिलने नागपुर गये। यह भेंट इस बात का प्रमाण है कि क्रांतिकारी आंदोलन के नेता भी संघ की शक्ति और संगठनात्मक क्षमता को पहचानते थे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-आलेख से यह स्पष्ट होता है कि अनुशीलन समिति एवं डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के बीच गहन एवं महत्वपूर्ण संबंध रहा। समिति में प्राप्त प्रशिक्षण, अनुशासन और संगठनात्मक अनुभव ने डॉ. हेडगेवार की वैचारिक दृष्टि को आकार दिया और आगे चलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संरचना एवं कार्यप्रणाली का आधार बना। अनुशीलन समिति की शारीरिक प्रशिक्षण पद्धति, प्रतिज्ञा परंपरा, अनुशासन और गोपनीयता के सिद्धांत–ये सभी संघ की कार्यपद्धति में प्रतिबिंबित हुए।

परंतु डॉ. हेडगेवार ने केवल समिति की नकल नहीं की, अपितु उसके अनुभवों से सीखते हुए एक नए प्रकार के संगठन की नींव रखी। उन्होंने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में परिवर्तित किया। उन्होंने समझा कि सशस्त्र संघर्ष के साथ-साथ समाज के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भी आवश्यकता है। संघ ने हिंदू समाज को संगठित करने, आत्मविश्वास जगाने और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने का कार्य अपने हाथ में लिया।

अनुशीलन समिति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी आंदोलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। इसकी विरासत ने न केवल डॉ. हेडगेवार को प्रभावित किया, अपितु आने वाली पीढ़ियों के राष्ट्रवादी संगठनों को भी प्रेरणा प्रदान की। यह शोध दर्शाता है कि इतिहास एक सातत्य है, जहाँ एक पीढ़ी के संघर्ष और अनुभव अगली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक बनते हैं। क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की यह विरासत सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में आज भी जीवित है।

संदर्भ सूची (References)

1. *चक्रवर्ती, जोगेश चंद्र। (1958)।* इन सर्च ऑफ फ्रीडम। *कलकत्ता: बी. के. मजूमदार।*
2. *चक्रवर्ती, त्रैलोक्य नाथ।* जेल में तीस वर्ष।
3. *पालेकर, ना. हा.। (2020)।* डॉ. हेडगेवार चरित। *लखनऊ: लोकहित प्रकाशन।*
4. *वर्मा, डॉ. श्याम बहादुर।* हमारे डॉ. हेडगेवार जी।
5. *सहगल, नरेंद्र। (2018)।* भारतवर्ष की सर्वांग स्वतंत्रता। *नई दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स।*
6. *सहगल, नरेंद्र।* डॉक्टर हेडगेवार, संघ और स्वतंत्रता संग्राम।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

7. *सिन्हा, राकेश।* आधुनिक भारत के निर्माता: डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार।
8. *वनहाडपाण्डे, बा. ना.। (1995)।* संघ कार्यपद्धति का क्रमिक विकास। *नागपुर: श्री भारती प्रकाशन।*
9. *गोलवलकर, मा. स.। (2018)।* विचार नवनीत। *जयपुर: ज्ञान गंगा प्रकाशन।*
10. *राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली। गृह/राजनीतिक 1909, 1912 फाइलें।*
11. *संघ अभिलेखागार, नागपुर।*